



1 March, 2024

जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट (GIP)

संदर्भ: जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट ने हाल ही में 10,000 संपूर्ण जीनोम के अनुक्रमण की घोषणा की, जिससे देश की आबादी का एक व्यापक आनुवंशिक प्रोफाइल तैयार किया गया।

जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट के बारे में:

- जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट के लिए 8 पेटाबाइट्स का विशाल डेटासेट, जिसके लिए प्रति अनुक्रम 80 जीबी स्टोरेज स्पेस की आवश्यकता होती है, को फ्रीदाबाद में भारतीय जैविक डेटा सेंटर में संग्रहीत किया जाएगा।
- यह डेटासेट शोधकर्ताओं के लिए "डिजिटल सार्वजनिक वस्तु" के रूप में उपलब्ध होगा, जो नए निदान, उपचार और दुर्लभ बीमारियों की पहचान में सहायता करेगा।

जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट का महत्व:

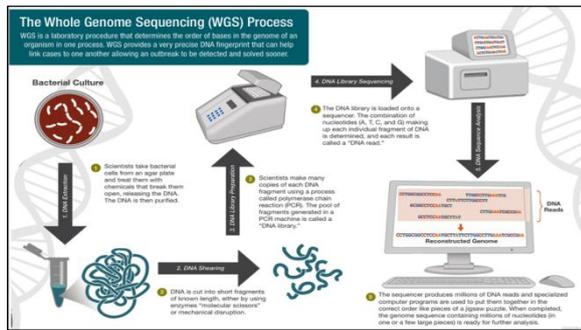
- वर्ष 2020 में स्वीकृत, जीनोम इंडिया परियोजना का लक्ष्य भारतीय आबादी के भीतर विविधताओं की एक व्यापक आनुवंशिक सूची तैयार करना है।
- यह भारतीय आबादी के अनुरूप आनुवंशिक विविधता, रोग आनुवंशिकी और भविष्य के उपचारों को समझने में सुविधा प्रदान करता है।
- 5,750 जीनोम अनुक्रमों के विश्लेषण से भारत में 135 मिलियन आनुवंशिक वैरिएंट की पहचान पहले ही की जा चुकी है।

परियोजना की अवधि और प्रक्रिया:

- पहले पूर्ण मानव जीनोम अनुक्रमण में 13 वर्ष और 3 बिलियन डॉलर लगे, जो 2003 में पूरा हुआ।
- भारत ने 2009 में अपने पहले पूर्ण मानव जीनोम की घोषणा की थी, और जीनोम इंडिया परियोजना ने तीन से चार महीनों में 10,000 जीनोम पूरे किए।
- जनजातीय आबादी सहित देश भर के 99 अलग-अलग जनसंख्या समूहों से नमूना संग्रह में COVID-19 महामारी के कारण विलंब का सामना करना पड़ा।

जीनोम अनुक्रमण:

- जीनोम और जीनोम अनुक्रमण:**
 - जीनोम की परिभाषा:** जीनोम में एक कोशिका के भीतर डीएनए निर्देशों का पूरा समूह शामिल होता है, जिसमें उसके विकास और कार्यप्रणाली संबंधी सभी आवश्यक जानकारी होती है।
 - डीएनए संरचना:** डीएनए, या डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड, आनुवंशिक जानकारी को एन्कोड करने वाला एक रासायनिक पदार्थ है। इसमें चार आधारों के साथ एक डबल हेलिक्स बनाने वाली युग्मित किस्में होती हैं: एडेनिन (A), थाइमिन (T), गुआनिन (G), और साइटोसिन (C)।
 - संपूर्ण जीनोम अनुक्रमण:** किसी जीव के संपूर्ण आनुवंशिक कोड को अनुक्रमित करने की एक विधि, जो विभिन्न जीवन रूपों पर लागू होती है।
- संपूर्ण जीनोम अनुक्रमण में शामिल चरण:**
 - डीएनए विभाजन:** किसी जीव के डीएनए को प्रबंधनीय टुकड़ों में विभाजित करने के लिए आणविक उपकरणों का उपयोग किया जाता है।
 - डीएनए बारकोडिंग:** डीएनए टुकड़ों को अलग करने के लिए पहचान टैग या बार कोड जोड़े जाते हैं।



- डीएनए अनुक्रमण:** ए, सी, टी और जी आधारों के अनुक्रम की पहचान करने के लिए इन DNA टुकड़ों को अनुक्रमित किया जाता है।
- डेटा विश्लेषण:** जैव सूचनात्मक उपकरण अनुक्रमों का विश्लेषण करते हैं, जीवों के बीच अंतर और संबंधों की पहचान करते हैं।

जीनोम अनुक्रमण की दिशा में वैश्विक प्रयास:

- मानव जीनोम परियोजना (HGP):** यह परियोजना वर्ष 1990 में शुरू की गई, जिसका उद्देश्य रोग अनुसंधान और उन्नत जीनोमिक चिकित्सा में सहायता के लिए संपूर्ण मानव जीनोम को अनुक्रमित करना था।
- डीएनए तत्वों का विश्लेषण (ENCODE) परियोजना:** इसे वर्ष 2003 में शुरू किया गया, जिसका उद्देश्य मानव जीनोम के भीतर सभी कार्यात्मक तत्वों की पहचान करना है।
- अर्थ बायोजेनोम प्रोजेक्ट (EBP):** इसके अंतर्गत पृथ्वी पर सभी यूकेरियोटिक जीवन रूपों को अनुक्रमित और सूचीबद्ध करने का लक्ष्य है, इसे वर्ष 2018 में दस वर्ष की समयसीमा के साथ शुरू किया गया था।

भारत की पहली स्वदेशी हाइड्रोजन ईंधन सेल फ़ेरी नाव

संदर्भ: प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए भारत की पहली स्वदेशी रूप से निर्मित हाइड्रोजन ईंधन सेल नौका (नाव) का उद्घाटन किया।

नौका (नाव) के बारे में:

- कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (CSL) द्वारा निर्मित इस जहाज को वाराणसी, उत्तर प्रदेश में सेवा के लिए नामित किया गया है।
- 24 मीटर लंबे कैटामरन डिजाइन की विशेषता के साथ, यह अपने वातानुकूलित क्षेत्र में 50 यात्रियों को समायोजित कर सकता है।
- इसे मेट्रो ट्रेन कोच के समान उच्च गुणवत्ता वाले फाइबरग्लास प्रबलित प्लास्टिक का उपयोग करके तैयार किया गया है।

नौका (नाव) की विशेषताएं:

- हाइड्रोजन ईंधन सेल से संचालित यह नौका (नाव) पारंपरिक बैटरियों के बिना भी संचालित हो सकता है। वह सिलेंडर में संग्रहीत हाइड्रोजन ईंधन पर निर्भर होता है।
- इसमें पांच हाइड्रोजन सिलेंडर होते हैं जो 40 किलोग्राम हाइड्रोजन ले जाने में सक्षम हैं, जिससे आठ घंटे तक संचालन की सुविधा मिलती है।
- इसके अतिरिक्त, यह नाव अतिरिक्त ईंधन/विद्युत के लिए 3 किलोवाट के सौर पैनल से सुसज्जित है।
- शून्य उत्सर्जन और शोर की पेशकश करते हुए, यह ऊर्जा दक्षता का दावा करता है और दहन वाहिकाओं की तुलना में इसके न्यूनतम रखरखाव की आवश्यकता होती है।

हाइड्रोजन ईंधन सेल कैसे काम करते हैं:

- हाइड्रोजन ईंधन सेल हाइड्रोजन में संग्रहीत रासायनिक ऊर्जा का उपयोग करके बिजली उत्पन्न करते हैं, और उपोत्पाद के रूप में केवल शुद्ध पानी उत्सर्जित करते हैं।
- हाइड्रोजन विद्युत निर्माण के लिए ऑक्सीजन के साथ प्रतिक्रिया करता है, हाइड्रोजन कोशिकाएं रिचार्जिंग की आवश्यकता के बिना निरंतर संचालन बनाए रखती हैं।
- यह तकनीक आधुनिक परिवहन के लिए महत्वपूर्ण है, जो पारंपरिक जीवाश्म ईंधन का एक स्वच्छ विकल्प प्रदान करती है।

प्रयुक्त सेल (बैटरी) का प्रकार:

- लिथियम-आयन फॉस्फेट बैटरी के साथ युग्मित 50-किलोवाट पीईएम (प्रोटॉन-एक्सचेंज झिल्ली) के द्वारा ईंधन सेल को नियोजित करने से, नौका वजन में हल्का होने के साथ-साथ अपनी विद्युत आपूर्ति भी सुनिश्चित करता है।
- पीईएम ईंधन सेल अपनी बहुमुखी प्रतिभा और दक्षता के लिए प्रसिद्ध हैं, जो कम तापमान पर काम करते हैं और बिजली की मांग के जवाब में आउटपुट को तुरंत समायोजित करते हैं।

Face to Face Centres





1 March, 2024



विकास की प्रक्रिया:

- कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने स्वचालन और बिजली प्रबंधन प्रणालियों के विकास सहित नौका/नाव के निर्माण का भी नेतृत्व किया।
- हाइड्रोजन ईंधन सेल प्रणाली केपीआईटी टेक्नोलॉजीज, पुणे और वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान प्रयोगशाला परिषद के बीच का एक सहयोगात्मक प्रयास था।
- स्वदेशी हाइड्रोजन ईंधन सेल प्रौद्योगिकी में भारत की वर्तमान प्रगति स्थायी समुद्री समाधान और हरित ऊर्जा पहल के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

पहल और दिशानिर्देश:

- यह नौका/नाव बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय की 'हरित नौका' पहल के अनुरूप है, जिसका लक्ष्य अंतर्देशीय जल परिवहन में हरित परिवर्तन लाना है।
- इस पहल के दिशानिर्देश अंतर्देशीय जलमार्ग-आधारित यात्री बेड़े के लिए हरित ईंधन के बढ़ते उपयोग को अनिवार्य करते हैं, जो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और पर्यावरण संरक्षण में अहम योगदान देता है।
- यह पहल पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने और परिवहन में नवाचार को बढ़ावा देने के प्रति भारत के सक्रिय दृष्टिकोण को दर्शाती है।

इंटरनेशनल बिग कैट एलायंस (IBCA)

संदर्भ: केंद्रीय मंत्रिमंडल ने इंटरनेशनल बिग कैट एलायंस (IBCA) की स्थापना को हाल ही में मंजूरी दे दी है, जिसका मुख्यालय भारत में स्थित होगा।

आईबीसीए की पृष्ठभूमि और स्थापना:

- भारत के प्रधानमंत्री ने वर्ष 2019 में वैश्विक बाघ दिवस और अप्रैल 2023 में प्रोजेक्ट टाइगर के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में बड़ी बिल्लियों के लिए भारत के संरक्षण प्रयासों पर जोर दिया।
- इसके परिणामस्वरूप बड़ी बिल्लियों की प्रजातियों के भविष्य और उनके आवासों को सुरक्षित करने के लिए इंटरनेशनल बिग कैट एलायंस (IBCA) की औपचारिक घोषणा हुई थी।
- भारत; बाघों, शेरों, तेंदुओं, हिम तेंदुओं और चीतों सहित सात बड़ी बिल्लियों की प्रजातियों में से पांच का घर होने के नाते, इस गठबंधन में एक महत्वपूर्ण भूमिका रखता है।

शामिल क्षेत्र और सदस्यता:

- IBCA की कल्पना एक विभिन्न देशों की बहु-एजेंसी गठबंधन के रूप में की गई है जिसमें 96 बड़े कैट रेंज वाले देश, गैर-रेंज देश, संरक्षण भागीदार, वैज्ञानिक संगठन और व्यावसायिक समूह आदि शामिल हैं।
- इसका उद्देश्य बड़ी बिल्लियों की प्रजातियों के संरक्षण के लिए सफल संरक्षण प्रथाओं, कर्मियों और वित्तीय सहायता को केंद्रीकृत करने के लिए एक नेटवर्क स्थापित करना सहित उनके मध्य तालमेल विकसित करना है।
- इस हेतु विभिन्न हितधारकों को शामिल करके, गठबंधन का लक्ष्य अन्य श्रेणी के देशों में भारत की अग्रणी संरक्षण प्रथाओं को दोहराना है।

उद्देश्य और दृष्टिकोण:

- यह गठबंधन अनुभव साझा करने, क्षमता निर्माण, वकालत और वित्तीय सहायता पर ध्यान केंद्रित करते हुए संरक्षण एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए देशों के बीच आपसी सहयोग चाहता है।
- इसका उद्देश्य आर्थिक और विकास नीतियों में प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र की केंद्रीयता पर जोर देते हुए, सतत विकास और जलवायु परिवर्तन शमन के लिए शुभंकर के रूप में बड़ी बिल्लियों का लाभ उठाना है।
- इस प्रकार का सहयोगी मंच स्वर्ण मानक संरक्षण प्रथाओं के बढ़ते प्रसार और तकनीकी विशेषज्ञता तक पहुंच की सुविधा प्रदान करता है, जिसका लक्ष्य पारिस्थितिक भविष्य को सुरक्षित करना और जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करना है।

शासन और वित्त पोषण:

- आईबीसीए की शासन संरचना में सदस्यों की एक सभा, स्थायी समिति और भारत में मुख्यालय वाला सचिवालय शामिल है।
- इस समझौते की रूपरेखा अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) के अनुरूप तैयार की गई है, जिसमें द्विपक्षीय और बहुपक्षीय एजेंसियों, सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों और दाता एजेंसियों से अतिरिक्त वित्त पोषण की योजना शामिल है।
- यह गठबंधन का प्रारंभिक समर्थन पांच वर्षों (2023-24 से 2027-28) के लिए भारत सरकार की ओर से 150 करोड़ रुपये स्थायी संरक्षण प्रयासों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

जैव विविधता और सतत विकास को मुख्यधारा में लाना:

- आईबीसीए उन नीतिगत पहलों की वकालत करता है जो समग्र और समावेशी संरक्षण परिणामों को प्राप्त करने के लिए सतत विकास लक्ष्यों (SDG) के साथ जैव विविधता संरक्षण प्रयासों को एकीकृत करती हैं।
- यह जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, स्वच्छ जल और गरीबी में कमी से संबंधित एसडीजी के साथ संरेखित होकर स्थायी भूमि-उपयोग प्रथाओं, आवास बहाली पहल और पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।
- यह गठबंधन स्थानीय जरूरतों को पूरा करने और सदस्य देशों के भीतर संयुक्त राष्ट्र एसडीजी की प्राप्ति में योगदान करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में जैव विविधता को मुख्यधारा में लाने के महत्व को उजागर करता है।

प्रभाव और भविष्य की संभावनाएँ:

- बड़ी बिल्लियों और उनके आवासों की सुरक्षा करके, IBCA प्राकृतिक जलवायु अनुकूलन, जल और खाद्य सुरक्षा और इन पारिस्थितिक तंत्रों पर निर्भर समुदायों की भलाई में योगदान देता है।
- इस हेतु पारस्परिक लाभ के लिए देशों के बीच सहयोग और दीर्घकालिक संरक्षण लक्ष्यों को आगे बढ़ाना गठबंधन के अपेक्षित परिणाम हैं।
- सहयोगात्मक कार्यवाई और पहल के माध्यम से, IBCA का लक्ष्य हरित अर्थव्यवस्था परियोजनाओं को बढ़ाना और विभिन्न देशों में सक्षम भागीदारों के संरक्षण और समृद्धि को सुनिश्चित करना है।



Face to Face Centres





1 March, 2024

NEWS IN BETWEEN THE LINES

जल सर्वेक्षण पुरस्कार

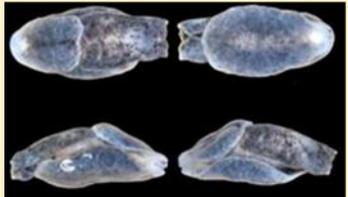


हाल ही में, केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय ने घोषणा की कि भारत के राष्ट्रपति 5 मार्च 2024 को नई दिल्ली में पहला पेय जल सर्वेक्षण पुरस्कार प्रदान करेंगे।

पेय जल सर्वेक्षण पुरस्कार के बारे में:

- पेय जल सर्वेक्षण (पीजेएस) पुरस्कार अटल कायाकल्प और शहरी परिवर्तन मिशन (अमृत) 2.0 का एक अभिन्न अंग है।
- प्राथमिक लक्ष्य शहरों के भीतर जल आपूर्ति, सीवरेज, सेप्टेज प्रबंधन, अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग और जल निकाय संरक्षण से संबंधित सेवा स्तर की उपलब्धियों का आकलन करना और उन्हें स्वीकार करना है।
- ये पुरस्कार शहरों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं जिससे उन्हें अपनी जल प्रबंधन प्रणालियों में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।
- इसके अंतर्गत 130 पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे जिनमें पे जल गोल्ड, सिल्वर और ब्रॉन्ज सिटी अवार्ड्स शामिल हैं जो विभिन्न जनसंख्या श्रेणियों में शीर्ष प्रदर्शन करने वालों को दिए जाएंगे।
- सर्वश्रेष्ठ जल निकाय, स्थिरता चैंपियन, पुनः उपयोग चैंपियन, जल गुणवत्ता, शहर संतृप्ति और वर्ष की प्रतिष्ठित अमृत 2.0 रोटेटिंग ट्रॉफी के लिए अतिरिक्त सम्मान दिए जाएंगे।
- यह पहल न केवल जल प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका को बढ़ाती है बल्कि अमृत 2.0 के सामाजिक-आर्थिक उद्देश्यों के साथ भी निकटता से मेल खाती है।

मेलानोक्लेमिस द्रौपदी



हाल ही में, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (ZSI) ने रूबी लाल धब्बे वाले हेड-शील्ड समुद्री स्लग की एक नई प्रजाति की खोज की है जिसे राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के सम्मान में मेलानोक्लेमिस द्रौपदी नाम दिया गया है।

मेलानोक्लेमिस द्रौपदी के बारे में:

- मेलानोक्लेमिस द्रौपदी नाम की यह प्रजाति पश्चिम बंगाल और ओडिशा के तटों के साथ खोजी गई थी।
- रूपात्मक लक्षणों में छोटा, कुंद, चिकनी पृष्ठीय सतह वाला बेलनाकार शरीर और दो पृष्ठीय ढाल - पूर्वकाल मस्तक और पश्चिम ढाल शामिल हैं।
- यह एक छोटा अकशेरुकी प्राणी है जिसकी अधिकतम लंबाई 7 मिमी तक होती है और इसका रंग भूरा काला होता है, जिसके पीछे के सिरे पर एक प्रमुख माणिक्य लाल धब्बा होता है।
- यह प्रायः ज्वारभाटे वाले क्षेत्रों में पाया जाता है जो रेतीले समुद्र तटों पर रेंगने के निशान छोड़ता है।
- मेलानोक्लेमिस द्रौपदी का प्रजनन चक्र नवंबर और जनवरी के महीनों के बीच होता है।
- इस समूह की प्रजातियाँ आम तौर पर इंडो-पैसिफिक महासागरीय क्षेत्र के समशीतोष्ण क्षेत्रों में वितरित होती हैं, लेकिन तीन प्रजातियाँ वास्तव में उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वितरित होती हैं, थाईलैंड की खाड़ी से मेलानोक्लेमिस पैपिलता, पश्चिम बंगाल और ओडिशा तट से मेलानोक्लेमिस बंगालेंसिस और वर्तमान प्रजाति।

कृष्णराज सागर जलाशय



हाल ही में, कर्नाटक को भीषण गर्मी का सामना करना पड़ रहा है जिससे प्रमुख शहरों के लिए महत्वपूर्ण कृष्णराज सागर जलाशय में घटते जल स्तर पर चिंता बढ़ गई है, क्योंकि यह फरवरी में 2018 के बाद से अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है।

कृष्णराज सागर जलाशय/बांध के बारे में:

- कृष्णराज सागर (के.आर.एस.) बांध कर्नाटक के मैसूर जिले में स्थित एक गुरुत्वाकर्षण बांध है।
- यह कावेरी नदी और उसकी सहायक नदियों, हेमावती और लक्ष्मण तीर्थ के संगम पर स्थित है।
- कृष्णराज सागर बांध का निर्माण 1911 में शुरू हुआ था और इसे मैसूर के कृष्ण राज वाडियार चतुर्थ महाराज के शासनकाल में 1931 में पूरा किया गया था।
- बांध को प्रसिद्ध भारतीय इंजीनियर सर एम. विश्वेश्वरैया द्वारा डिज़ाइन किया गया था (उनका जन्मदिन 15 सितंबर को इंजीनियर्स डे के रूप में मनाया जाता है)।
- उस समय भारत में सीमेंट का निर्माण नहीं होता था, इसलिए बांध को सीमेंट के बजाय सुरखी मोर्टार से बनाया गया था।
- यह बांध 2,621 मीटर (8,600 फीट) लंबा, 40 मीटर (130 फीट) ऊंचा है और इसमें 177 लोहे के स्तुम्भ हैं।

कावेरी नदी

- कावेरी नदी दक्षिण भारत की एक पवित्र नदी है और इसे अक्सर दक्षिण भारत की गंगा के रूप में जाना जाता है।
- यह दक्षिण-पश्चिम कर्नाटक के पश्चिमी घाटों की ब्रह्मगिरी पहाड़ी से निकलती है, कर्नाटक और तमिलनाडु राज्यों से होकर बहती है और अंततः तमिलनाडु के मयिलादुथुराई जिले में पंपुहार में बंगाल की खाड़ी में मुहाना बनती है।
- इसका बेसिन तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और केंद्र शासित प्रदेश पुदुचेरी राज्यों में विस्तृत है।
- कावेरी की प्रमुख बाएं तट की सहायक नदियों में हारंगी, हेमावती, शिम्शा और अर्कवती नदियां शामिल हैं, जबकि महत्वपूर्ण दाहिने तट की सहायक नदियों में लक्ष्मणतीर्थ, कबानी, सुवर्णवती, भवानी, नोयल और अमरावती नदियां शामिल हैं।

मुदुमलाई टाइगर रिजर्व



हाल ही में, मुदुमलाई टाइगर रिजर्व में किए गए एक हर्पेटोफॉनल सर्वेक्षण में उभयचर और सरीसृपों की 82 प्रजातियां दर्ज की गईं।

मुदुमलाई टाइगर रिजर्व:

- मुदुमलाई टाइगर रिजर्व (एमटीआर) तमिलनाडु के नीलगिरी पर्वत में एक राष्ट्रीय उद्यान है।
- यह कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के त्रि-जंक्शन पर स्थित है।
- यह रिजर्व नीलगिरी बायोस्फीयर रिजर्व का हिस्सा है जो भारत का पहला बायोस्फीयर रिजर्व है जिसे 1986 में स्थापित किया गया था।
- इसकी सीमा पश्चिम में केरल के वायनाड वन्यजीव अभयारण्य और उत्तर में कर्नाटक के बांदीपुर टाइगर रिजर्व से लगती है।
- वनस्पति:** वनस्पतियों में लंबी घासें शामिल हैं, जिन्हें "हाथी घास", विशाल बांस और सागौन और रोजवुड जैसी मूल्यवान लकड़ी की प्रजातियां शामिल हैं।
- जीव-जंतु:** इसमें बाघ, हाथी, भारतीय गौर, पैथर, सांभर, चित्तीदार हिरण, बार्किंग हिरण, माउस हिरण, मैंगोज, मालाबार विशाल गिलहरी और बहुत कुछ है।

Face to Face Centres





1 March, 2024

<p>खसरा</p> 	<p>हाल ही में, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने बताया कि दुनिया की आधी से अधिक आबादी खसरे के उच्च जोखिम का सामना कर रही है। खसरे के बारे में:</p> <ul style="list-style-type: none"> खसरा एक अत्यधिक संक्रामक, गंभीर वायुजनित रोग है जो एक वायरस के कारण होता है। यह छोटे बच्चों में सबसे आम है और इससे गंभीर जटिलताएँ और मृत्यु हो सकती है। वायरस प्रारंभ में श्वसन पथ को संक्रमित करता है और फिर पूरे शरीर में फैल जाता है। मनुष्य खसरा वायरस का एकमात्र प्राकृतिक मेजबान है। खसरा भारत के सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम के अंतर्गत शामिल है। खसरे के लक्षणों में तेज बुखार, खांसी, नाक बहना और पूरे शरीर पर दाने निकलना शामिल हैं। एमआर (खसरा रूबेला) टीके से इसे रोका जा सकता है।
<p>सुर्खियों में स्थल</p> <p>बेल्जियम</p>	<p>हाल ही में, बेल्जियम यूरोपीय महाद्वीप में 'पारिस्थितिकी हत्या' को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय अपराध के रूप में मान्यता देने वाला पहला देश बन गया है। बेल्जियम (राजधानी: ब्रुसेल्स) अवस्थिति : बेल्जियम, आधिकारिक तौर पर बेल्जियम साम्राज्य उत्तर पश्चिमी यूरोप में स्थित एक देश है। राजनीतिक सीमाएँ: बेल्जियम की सीमा जर्मनी (पूर्व), उत्तरी सागर (पश्चिम), नीदरलैंड (उत्तर), फ्रांस (दक्षिण) और लक्ज़मबर्ग (दक्षिणपूर्व) से लगती है। भौतिक विशेषताएँ:</p> <ul style="list-style-type: none"> बेल्जियम की प्रमुख नदियों में शेल्ड्ट (एस्काउट), मीयूज़ (मास) और येसर शामिल हैं। बेल्जियम का सबसे ऊँचा स्थान सिम्ल डी बोर्ट्रेज़ है जो हाई फ्रेंस क्षेत्र में स्थित है। एंटवर्प दुनिया के सबसे बड़े बंदरगाहों में से एक है और बेल्जियम के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्र है। सदस्यता: बेल्जियम यूरोपीय संघ, डब्ल्यूएचओ, डब्ल्यूटीओ, ओईसीडी, नाटो और संयुक्त राष्ट्र सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों का सदस्य है। <p>इकोसाइड:</p> <ul style="list-style-type: none"> 'पारिस्थितिकी हत्या/इकोसाइड (ग्रीक ओइकोस-होम और लैटिन कैडो-मारना) मनुष्यों द्वारा पर्यावरण का विनाश है। इकोसाइड का तात्पर्य इस ज्ञान के साथ किए गए गैरकानूनी या अनियंत्रित कृत्यों से है कि उन कृत्यों के कारण पर्यावरण को गंभीर और व्यापक या दीर्घकालिक क्षति होने की पर्याप्त संभावना है। यह शब्द 1970 में अमेरिकी जीवविज्ञानी आर्थर गैलस्टन द्वारा गढ़ा गया था। भारत ने अभी भी अपने कानूनी ढांचे के भीतर पारिस्थितिकी-संहार को अपराध नहीं बनाया है। 

POINTS TO PONDER

- कलकत्ता उच्च न्यायालय का कहना है कि मातृत्व अवकाश बढ़ाने के लिए संविदा और स्थायी कर्मचारियों के बीच अंतर करते समय भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद का उल्लंघन किया गया है? - **अनुच्छेद 14**
- केंद्रीय आपातकालीन प्रतिक्रिया कोष (सीईआरएफ) की स्थापना कब और किसके द्वारा की गई थी? - **2005 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा स्थापित।**
- किस देश ने हाल ही में विरोध का सामना करने के बावजूद परमाणु-दूषित पानी का चौथा निर्वहन शुरू किया? - **जापान**
- केरल उच्च न्यायालय की हालिया टिप्पणी के अनुसार, संविधान के तहत कौन सा मौलिक अधिकार हिंदू समुदाय के किसी भी सदस्य को अर्चक (पुजारी) की भूमिका निभाने का अधिकार नहीं देता है? - **अनुच्छेद 25**
- भारत सरकार द्वारा भारत की वित्तीय खुफिया इकाई (FIU) की स्थापना कब की गई थी? - **नवंबर 2004**

Face to Face Centres

